P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आदिवासी महिलाओं की विशिष्ट गायनशैली – सुड्डा

अनीता मीणा
शोध छात्रा,
संगीत विभाग,
राजकीय कला कन्या
महाविद्यालय,
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा,
राजस्थान, भारत

रौशन भारती
सह आचार्य,
संगीत विभाग
राजकीय कला कन्या
महाविद्यालय,
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा
राजस्थान, भारत

सारांश

लोकगीतों की परम्परा अत्यधिक प्राचीन रही है ये उतने ही पुराने हैं जितना मानव जीवन। इन लोकगीतों में मानवी जीवन की प्रारम्भिक, मध्य, अंत एवं प्राकृतिक चढ़ाव–उतार की स्थितियाँ सहज रूप से चित्रित होती है। लोकगीत लोकभाषा या जनजातियों की बोली कहे जा सकते हैं। ज्यादातर लोकगीत महिलाओं द्वारा गाए जाते हैं और उनके रचयिता निरक्षर तथा अज्ञानी होते हैं। इन लोकगीतों में वैयक्तिकता की अपेक्षा सामाजिकता अधिक होती है। बदलते हुए समय के साथ लोकगीतों का स्वरूप भी बदलता है। ये जनमानस में उपजता है लेकिन समयानुसार नये मनोभावों को अपने में समाविष्ट करता रहता है और यह परिवर्तन ही उसकी गतिशीलता है।

मुख्य शब्द : गायनशैली, लोकगीत, आदिवासी, सामाजिकता, लिंगभेद, संस्कृति चित्रण, रूढ़िता।

प्रस्तावना

प्रारम्भिक काल से ही मीणा जनजाति आयुधजीवी और संघर्षशील रही है परन्तु उसका चरित्र जीवन्त और रोमांटिक रहा है। राज्य–साम्राज्य होने पर भी कभी इन्होंने सामन्ती वैभव और लकदक जीवन जीने की परवाह नहीं की। इनका जीवन लोक परम्परा का सादगीपूर्ण और कलात्मक जीवन रहा है। इनकी रहन–सहन, वेशभूषा, मकानों की सज्जा, मेले, उत्सवों पर स्वच्छन्द नाच–गान, खेती में काम आने वाले उपकरणों और पशुओं की सज्जा इनकी जीवन्त एवं कलात्मक संस्कृति का परिचायक है।

किसी भी समुदाय की धरोहर होते हैं – लोकगीत और लोकगीतों का जनजाति समुदायों में विशिष्ट स्थान देखने को मिलता है। इनकी सामाजिक जीवनशैली, रीति–रिवाज, वेशभूषा, मूल्य–विश्वास, पर्व आदि इन लोकगीतों के रूप में व्यक्त होकर विशिष्ट संस्कृति के दर्शन कराती है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का सीधा और सबल उद्देश्य आदिवासियों की छिपी हुई गायनशैली को प्रकाश में लाने का है जिसकी आज भी सामान्य जन और संगीत के विद्यार्थियों को सटीक जानकारी उपलब्ध नहीं हो सकी है। जनजातीय लोकगीत सदैव ही लोक परम्परा के जीवन की पूँजी रहे हैं परन्तु सभ्य समाज के सम्पर्क एवं काल परिवर्तन के कारण इनका स्वरूप परिवर्तित होने लगा है जो इनकी वास्तविकता या मूलता के लिए घातक भी हो सकते हैं अतः ऐसे विषयों पर विद्वानों को ध्यान केन्द्रित करने की अत्यधिक आवश्यकता है।

साहित्यावलोकन

प्रस्तुत अध्ययन आदिवासी समाज के बुद्धिजीवियों से प्रत्यक्ष साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त जानकारी के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

'सुड्डा' जैसी अन्य गायनशैलियाँ भी इन आदिवासियों में प्रचलन में देखी गई हैं जिनके अन्तर को विषय विशेषज्ञों से स्पष्ट रूप से समझने का प्रयास किया गया जिससे इस गायकी की सटीक जानकारी उपलब्ध करवायी जा सके।

द्वितीयक स्रोतों में पत्र–पत्रिकाओं आदि में प्रकाशित आलेख, इन्टरनेट आदि माध्यमों को उपयोग में लिया गया है।

विषय विस्तार

लोकगीतों के माध्यम से सच्ची ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित इतिहास को ये स्मरण रखते आये हैं। मीणा जनजाति की यह विशेषता रही है कि इनकी बोलचाल की भाषा में अनेक शब्दों का कोई स्पष्ट अर्थ नहीं होते हुए भी केवल प्राकृतिक रूप से आकस्मिक निर्मित हो जाने के पश्चात् निरन्तर उसी रूप में प्रयोग किए जाते हैं क्योंकि इनकी भाषा की कोई लिखित प्रामाणिक शैली आज भी प्राप्त नहीं होती। अतः अन्य भाषाओं से सम्पर्क में आने के कारण आदिवासियों द्वारा उन्हें ग्रहण कर उपयोग में लिया जाता है।

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-4*(Part-2) December- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

किसी भी समाज में मनुष्य द्वारा अपने नियम निर्मित किए जाते हैं जिससे लोग अनुशासनात्मक जीवन जी सके। इसी क्रम में मीणा जनजाति के अपने नियम और कानून होते हैं, जिनका पालन करना इनके लिए अनिवार्य होता है। प्रारम्भ में स्त्री–पुरूष, लिंगभेद जैसी अवधारणाऐं इनमें नहीं देखी जाती थी परन्तु कालान्तर में सभ्य समाज के सम्पर्क के कारण अनेक रूढ़ियों को अपनाया गया जिससे सांस्कृतिक हानि भी इनमें देखी जाने लगी। यहाँ इन आदिवासियों पर होने वाले इन्हीं बाहरी प्रभावों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। किसी भी जनजाति के समुदायों को देखने पर उनमें स्त्री–पुरूष, लिंग–भेद जैसी कुरीतियाँ दिखाई नहीं पड़ती, परन्तु जब मीणा जनजाति के लोकगीतों पर अध्ययन करने के प्रयास हेतु कार्य किया गया और 'सुड्डा' गायन शैली पर दृष्टि डालने पर अनेक प्रकार के भेद देखने को मिले।

हालांकि स्त्री–पुरूष दोनों ही इन लोकगीतों का गायन करते हैं परन्तु स्त्रियों को 'सुड्डा' गायन के लिए कुछ विशिष्ट नियमों का आदिवासी समुदाय द्वारा आरोपित कर दिया गया जिनमें कुछ नियम इस प्रकार से हैं –

1. मंच पर 'सुड्डा' गायन करते समय महिला सावधान की मुद्रा में और खड़े होकर ही गा सकेगी।
2. यह एक सामूहिक गायकी है परन्तु महिलाओं द्वारा समूह में इसका गायन नहीं किया जाएगा? परन्तु सामूहिक गायन होने के कारण पुरूषों से सहयोग प्राप्त कर वे इसका गायन कर सकती है।

निष्कर्ष

उपरोक्त नियमों से स्पष्ट हो जाता है कि जिस आदिवासी समाज में कभी भेदभाव का भाव नहीं देखने को मिलता वहाँ परिवर्तन होने लगा है और जहाँ स्त्रियों को भी पुरूषों के समान अधिकार प्राप्त थे वे सभ्य समाज के रूढ़ियों से आरोपित होने लगी है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व तक 'सुड्डा' लोकगीतों के गायन पर ऐसे नियमों को लागू नहीं किया जाता था परन्तु धीरे–धीरे बाद में ऐसे नियमों को उन पर जबरन थोप दिया गया। इन पर ये आरोपित करने या लागू करने का मुख्य कारण यह माना जा सकता है कि महिलाऐं इन गीतों के माध्यम से प्रत्यक्ष कटाक्ष करने और सामाजिक बुराईयों पर प्रकाश डालने का कार्य करती थी जो सामाजिक अपवादों के लिए असहनीय होते प्रतीत हुए होंगे। या यों कहें कि पुरूष वर्ग पर प्रत्यक्ष अस्त्र के रूप में प्रयोग होने के कारण ऐसा किया गया हो।

वर्तमान में स्त्रियों और पुरूषों के गायन में भिन्नताऐं देखने को मिलती है। हालांकि 'सुड्डा' गायन करने वाली महिलाएं आदिवासी समाज की किसी प्रतिष्ठावान व्यक्तित्व की तरह देखी जाती है। 'सुड्डा' गायन शैली के क्षेत्र में 'लाली मीणा' (सपोटरा तहसील) ने अत्यधिक ख्याति प्राप्त की है जिन्हें विभिन्न अवसरों पर इसके गायन हेतु आमंत्रित किया जाता है।

इस गायनशैली का प्रस्तुतीकरण 'अन्तर्राष्ट्रीय आदिवासी दिवस' के भव्य समारोह में अब तक की सर्वाधिक आदिवासी जनसंख्या के समक्ष किया गया जो अपने–आप में एक विशेष उपलब्धि है।

सुड्डा गायन करती हुई आदिवासी महिला

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अरावली उद्घोष (अप्रेल–जून 1999), राव लाडसिंह, पृ.सं. 60–63

.जनसत्ता (रविवारी समाचार पत्र 2012), मीणा डॉ. केदार प्रसाद, पृ.सं. 1–3

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, आदिवासी साहित्य में चित्रकला, शिल्प, संगीत और नृत्य, कोष्ठ डॉ. भाग्य श्री, पृ.सं. 93–98

.आदिवासी साहित्य की अवधारणा, मीणा हरिराम, पृ.सं. 15–23

भारतीय आदिवासी समाज में नारी का स्थान, घुमरे डॉ. सुलक्षणा जाधव, पृ.सं. 126–129

.भारतीय साहित्य और आदिवासी विमर्श (प्रथम संस्करण), 2017

'हमारी दुनिया हमारे लोग', अरावली उद्घोष अप्रेल 1998, पृ.सं. 97

राजस्थान में आदिवासियों की स्थिति, विकिपीडिया/इन्टरनेट

.आदिवासी लोककलाकार, मीणा प्रभुनारायण मीणा, जयपुर (साक्षात्कार एवं दूरभाष माध्यम)

सुड्डा गायिका, मीणा लाली, सपोटरा, इन्टरनेट/यू–ट्यूब